PARISHAD SAMMAN '87

परिषद् सम्मान-'87

Pt. AMARNATH

देश के प्रसिद्ध शास्त्रीय गायकों में से एक बहुचर्चित नाम है पं. अमरनाथ। आपने संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा प्रो. बी.एम. दत्ता से लाहौर में प्राप्त की। उसके बाद आप उस्ताद अमीर खाँ के शिष्य बने और लगभग 20 वर्षों तक उनकी संगत में रहे। पंडितजी अपने गायन शैली और सौन्दर्य बोध के कारण संगीत जगत में अपना विशिष्ट स्थान बना चुके हैं।

आकाशवाणी के राष्ट्रीय संगीत सम्मेलन तथा राष्ट्रीय प्रसारण में आपका गायन अनेक बार प्रसारित हुआ है। पंडितजी ने रंगमंच व फिल्मों के लिए भी पार्श्व संगीत दिया है। आपने 200 से अधिक मौलिक ख्याल रचनाएं बनाई हैं और कई नये रागों को कर्नाटक शैली व हिन्दुस्तानी शैली में प्रस्तुत किया है। 1957 में आपने शास्त्रीय संगीत के प्रशिक्षण का कार्य भार संभाला सर्वप्रथम आप त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ली से जुड़े रहे और बाद में भारतीय कला केन्द्र में संगीत–सिखाने में संलग्न रहे। आप के द्वारा प्रशिक्षित अनेको शिष्य इस समय भारत के सुप्रख्यात कलाकार हैं।

आप शास्त्रीय संगीत के आयामों पर शोधकार्य कर रहे हैं शीघ्र ही एक पुस्तक के रूप में हमारे सामने आएगी। अभी हाल में दूरदर्शन पर ग्रेट मास्टर की श्रृंखला में आपका गायन प्रस्तुत किया गया था। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की परम्परा के विकास में उल्लेखनीय योगदान के लिए साहित्य कला परिषद् पं. अमरनाथ को सम्मानित करती है।

Widely acknowledged today as the foremost interpreter of the Indore Gharana in Hindustani music, Pandit Amarnath was first trained under the guidance of professor B.N. Datta at Lahore. Later he became disciple of the celebrated Ustad Amir Khan,

Critically acclaimed as a musician's musician, Pandit Amarnath has performed widely, both in India and abroad (France, USA and Canada).

Panditji has also composed music for the theatre, the films (both feature and documentary) and the television as well.

Pandit Amarnath has contributed over 200 original khyal compositions to the gharana repertoire, chiefly the results of his personal involvement with the literary aspects of musical poetry. He has thought out many new raga compounds and adapted several Carnatic Ragas into the Indore style as well. These now form an integral part of the teaching of the Indore Gharana.

Teaching since 1957 (firstly as Head of the Vocal Music Department at Triveni Kala Sangam, Delhi and then as Guru, Hindustani Classical Music, at Shriram Bharatiya Kala Kendra) several performing artistes have been trained under him.

Pandit Amarnath has just completed "The Language of Hindustani Music", an alphabetically arranged volume of words, terms, proverbs and sayings which constitute the vocabulary of the oral (Hindustani Music) tradition to be published soon.

As a token of recognition of his outstanding contribution, in the field of Hindustani Classical Music, Sahitya Kala Parishad feels proud in honouring Pandit Amarnath.